Karwa Chauth 2024 Vrat Katha

एक ब्राह्मण के सात पुत्र थे। इन सात भाइयो की इकलौती बहन वीरावती थी। वीरावती के सातों भाई अपनी इकलौती बहन से बहुत ज्यादा स्नहे करते थे। कुछ समय बाद वीरावती का ब्याह किसी ब्राह्मण लड़के साथ हो गया था। विवाह के बाद वीरावती करवा चौथ के व्रत के समय मायके में ही थी।

उसने अपनी भाभियो के साथ अपने पति की लम्बी उम्र के लिए करवा चौथ का व्रत रखा था। वीरावती शाम होते-होते भूख से व्याकुल हो गयी थी। इसके बाद सभी भाई खाना खाने के लिए बैठते और वीरावती से भी खाना खाने के लिए आग्रह करते है।

वीरावती अपने व्रत के बारे में बताती है और कहती है कि उसने निर्जल व्रत रख रखा है और वह खाना सिर्फ चन्द्रमा को देखकर उसे अर्घ्य देकर ही खायेगी। वीरावती की दशा सभी भाइयो को दिख रही थी, क्योकि वह भूख से बहुत ही व्याकुल दिख रही थी।

ऐसे में एक भाई ने पीपल के पेड़ पर एक दिया प्रज्वलित कर दिया और उसे चलनी की ओट में रख देता है। इसके बाद एक भाई आकर वीरावती से कहता है कि चाँद निकल आया है, तुम अपना व्रत तोड़ सकती हो। ऐसे में वीरावती उस दीपक को चाँद समझकर गलत तरीके से अपना निर्जल व्रत तोड़ लेती है।

जब वह रोटी के एक टुकड़े को अपने मुँह में रखने का प्रयास करती है तो उसे अचानक छींक आ जाती है तथा दूसरा टुकड़े में बाल आ जाता है और तीसरे और अंतिम टुकड़े को अपने मुँह में रखने के का प्रयास करती है और उसे सके पति के मृत्यु के समाचार प्राप्त हो जाते है।

इस समाचार को सुनने के पश्चात उसकी एक भाभी ने उसे सच्चाई से अवगत करवाया कि गलत तरीके से उसने व्रत तोडा इसलिए देवता वीरावती से नाराज हो गए। यह सुनकर वह बहुत दुखी हुई।

एक बार भगवान इंद्र की पत्नी इंद्राणी धरती पर आयी। वीरावती इंद्राणी के पास गयी। देवी इन्द्राणी ने वीरावती को करवा चौथ के व्रत की प्रक्रिया को पूरी श्रद्धा के साथ करने के नियम तथा उपाय बताये। इसके बाद वीरावती ने पुनः करवाचौथ का व्रत रखा।

इस बार वीरावती ने बहुत ही श्रद्धा पूर्वक यह व्रत रखा था। वीरावती की इस अद्भुत श्रद्धा और भक्ति को देखकर भगवान बहुत ही प्रसन्न होकर वीरावती को सदा सुहागन का आशीर्वाद प्रदान किया। इसके बाद वीरावती का पति पुनः जिन्दा हो गया और उसकी भक्ति सफल हो गयी।

इस काठ के बाद महिलाओ को भगवान पर अटूट विश्वास हो गया और इसी दिन से महिलाये करवा चौथ का व्रत रखने लगी।